दुनिया भर में

15-18 करोड़ बच्चों

का दिमाग सीसे की विषाक्तता के कारण स्थायी रूप से कमजोर हो जाता है।

धरती की ऊपरी परत में कुदरती तौर पर थोड़ा सीसा (Pb) होता है। यह नीले-सलेटी रंग की एक भारी धातु है। इसका रासायनिक चिन्ह *Pb* है जो लैटिन शब्द *plumbum* से लिया गया है।

आपके घर में और आसपास सीसे के स्रोत

आपके घर में और आसपास दीवारों पर होने वाला रंग-रोगन सीसे का सबसे अहम स्रोत है।

रंगों में सीसा क्यों मिलाया जाता है?

1. यह रंगों को चमकदार बनाने का एक आसान और किफायती तरीका है।
2. इससे रंग तेजी से सूखते हैं।
3. सीसायुक्त रंग दीवारों, लकड़ी और धातुओं पर ज्यादा समय तक टिका रहता है।

नई तकनीकियों के आने से दुनिया भर के रंग-रोगन निर्माता अब सीसे के बिना भी ये सारे मकसद हासिल कर सकते हैं।

सीसे के संपर्क में आने से :

1. मानसिक और शारीरिक विकास धीमा हो जाता है।
2. सीखने की क्षमता कम हो जाती है।
3. सुनने में परेशानी होती है।
4. IQ कम हो जाता है।
5. व्यवहार संबंधी समस्याएं पैदा हो जाती हैं।
6. खून की कमी।
7. किडनी/गुर्दे में कमजोरी।
8. विभिन्न अंगों में तालमेल कम हो जाता है।
9. ज्यादा देर तक एक जगह ध्यान नहीं लगा पाना।
10. प्यूबर्टी तक पहुंचने में ज्यादा समय लगता है।

बच्चे इस तरह सीसे की चपेट में आते हैं

6 साल से कम उम्र के बच्चों पर सीसे के जहरीलेपन का खतरा सबसे ज्यादा रहता है।

कुछ इनेमल रंग में सीसे की काफी ज्यादा मात्रा हो सकती है।

संपर्क :

टॉक्सिक्स लिंक

एच–2, जंगपुरा एक्सटेंशन

नई दिल्ली – 110014

टेलिफोन : 91–11–24328006, 24320711

फैक्स : 91–11–24321747

ई–मेल : info@toxicslink.org

www.toxicslink.org

Toxics Link
for a toxics-free world

सीसे के असर

- सीसे के संपर्क में आने से हमारा दिमाग और तंत्रिका तंत्र कमजोर पड़ जाता है जिससे व्यक्ति कोमा में भी जा सकता है, शरीर में ऐंठन होने लगती है और उसकी मौत भी हो सकती है।
- सीसे से गंभीर रूप से प्रभावित 99 प्रतिशत बच्चे गरीब एवं मध्य आय देशों में रहते हैं।

शरीर में जाठो पर सीसा कहां जमा होता है?

- सीसा तेजी से हमारे खून में घुलने लगता है।
- यहां से वह 'कोमल उत्तकों' में दाखिल हो जाता है और किडनी, फेफड़ों, दिमाग, पेशियों और दिल को प्रभावित करने लगता है।
- कुछ समय बाद ज्यादातर सीसा हड्डियों, दांतों और हमारे बालों में जाकर जमा हो जाता है। इससे मानव शरीर की सामान्य कामकाज की क्षमता प्रभावित होने लगती है।
- सीसे के संपर्क में आने का असर स्थायी होता है। उसके प्रभावों को दूर नहीं किया जा सकता।

सफेद रंगों के मुकाबले उजले रंगों में ज्यादा सीसा होता है।

सफेद < काला < नीला < लाल < हरा < नारंगी < पीला

कम ज्यादा

इस समस्या को रोका जा सकता है

- कई छोटी-बड़ी रंग बनाने वाली कंपनियां यह दावा और प्रचार करती हैं कि, उनके रंगो में "मिलाया हुआ सीसा" (No Added Lead) नहीं होता है। यानी उन्होनें उस रंग को बनाते वक्त सीसे का ईस्तेमाल नहीं किया है।
- पेन्ट खरीदते समय पेन्ट के डिब्बे पर लिखी जानकारियों को गौर से देखें। जो पेन्ट अंतर्राष्ट्रीय "लैड सेफ" मानकों का पालन करता है, उन डिब्बों पर यह लिखा होना चाहिए कि "90 पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) से कम सीसे का इस्तेमाल" किया गया है।
- सार्वजनिक इमारतों और पार्कों में भी सीसे की सुरक्षित मात्रा वाले रंग-रोगन का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- घर में दोबारा साज-सज्जा से विषाक्तता फैल सकती है क्योंकि दीवारों से जो पुराने रंग की पपड़ी उतारी जाती है उसमें सीसा हो सकता है। उस समय सीसायुक्त धूल से अपने आपको बचाने के लिए अपने नाक और मुंह पर कपड़ा लपेट कर रखें।

सफेद रंगों में सीसे की मात्रा संबंधित नियम:

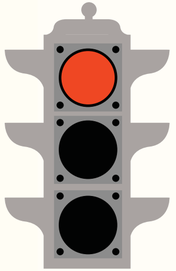

1935	तक बहुत सारे देशों में घरेलू पेन्ट्स के उत्पादन में सीसे के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी गई थी।
1909	फ्रांस, बेल्जियम और ऑस्ट्रिया
1922	ट्यूनीशिया और ग्रीस
1924	चैकोस्लोवाकियां
1926	ग्रेट ब्रिटेन, स्वीडन और बेल्जियम
1927	पौलेंड
1931	स्पेन और यूगोस्लाविया
1934	क्यूबा

संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने 1971 में रंगों में सीसे के इस्तेमाल पर पाबंदी लगाई थी।

Toxics Link
for a toxics-free world

IPEN
a toxics-free future

कितना महफूज है आपका घर आपके बच्चों के लिए?